

T.T.D. Religious Publications Series No. 1110

Price :

---

---

Published by **Sri M.G. Gopal**, I.A.S., Executive Officer,  
T.T.Devasthanams, Tirupati and Printed at T.T.D. Press, Tirupati.

श्रीनिवास बालभारती

# सावित्री

हिन्दी अनुवाद

प्रो. एम. माणिक्याम्बा



तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्  
तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 162

# सावित्री

तेलुगु मूल  
डॉ. एस. लक्ष्मणय्या

हिन्दी अनुवाद  
प्रो. एम. माणिक्याम्बा



तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्  
तिरुपति  
2014

**Srinivasa Bala Bharati - 162**  
*(Children Series)*

**SAVITHRI**

*Telugu Version*

**Dr. S. Lakshmanaiah**

*Hindi Translation*

**Prof. M. Manikyamba**

*Editor-in-Chief*

**Prof. Ravva Sri Hari**

T.T.D. Religious Publications Series No. 1110

©All Rights Reserved

First Edition - 2014

*Copies : 5000*

*Price :*

*Published by*

**M.G. Gopal, I.A.S.,**

Executive Officer,

Tirumala Tirupati Devasthanams,

Tirupati.

*D.T.P.:*

Office of the Editor-in-Chief

T.T.D, Tirupati.

*Printed at :*

Tirumala Tirupati Devasthanams Press,

Tirupati.

## दो शब्द

बच्चों का हृदय सुमनों की भांति निर्मल होता है। उत्तम कपूर से बढ़कर सुवासित उन के दिलों में बढ़िया संस्कार पैदा करना है। यदि उन में हम अच्छे संस्कार डालते हैं तो चिरकाल तक आदर्श जीवन बिताने के लिए सुस्थिर नींव पड़ जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढ़ियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं। इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए हमारी विरासत बने पौराणिक मूल्यों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक है।

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी बड़ों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनियों का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से 'श्रीनिवास बालभारती' का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों के माधुर्य के बच्चों तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे तथा परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का स्वागत कर रहे हैं। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

'श्रीनिवास बालभारती' की योजना तैयार करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सब को उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्रो.एस.बी. रघुनाथाचार्य अभिनंदनीय हैं।

इस प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति मैं अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

एम.ए. रघुनाथ

कार्यकारी अधिकारी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

## प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के प्रचुरण विभाग ने डॉ. एस.बी. रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित “बाल भारती सीरीस” के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग 900 पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्देश्य यही है कि बच्चे पढ़ें और बड़े लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढ़ा दें। फलस्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

**आर. श्रीहरि**

एडिटर-इन-चीफ

ति.ति.देवस्थानम्

## स्वागत

**श्रीनिवासदयोद्धता बालानां स्फूर्तिदायिनी।**

**भारती जयताल्लोके भारतीयगुणोज्ज्वला॥**

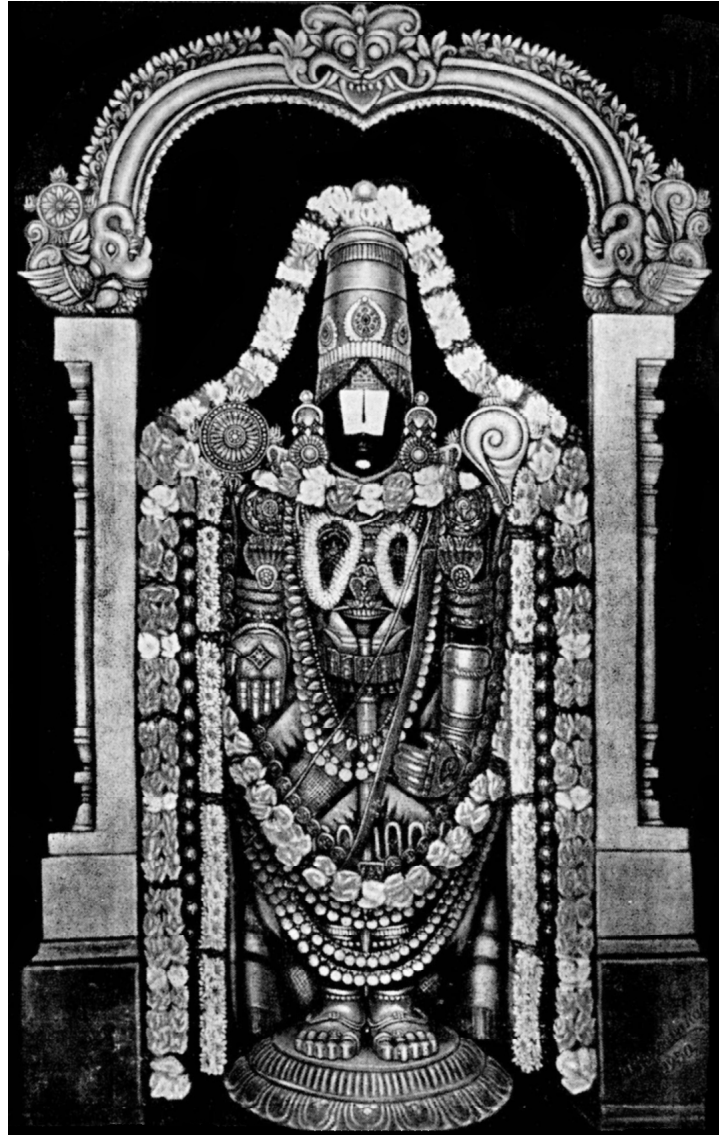
जब खण्डान्तरो में सभ्यता की बू तक नहीं थी तब भरतवर्ष अपनी सभ्यता, संस्कार, धर्म, नैतिकाचरण के लिए प्रसिद्ध हो गया था। जो इस पुण्य-भूमि पर जन्मता है वह धर्माचरण में स्थिर होकर अधर्म का सामना करता है और क्रमशः ईश्वराभिमुखी होकर यशोवान होता है। ऐसे महात्माओं के प्रभाव से हमारे जीवन इह-पर दोनों प्रकार लाभान्वित होते हैं। उनके आदर्शमय जीवनो से स्फूर्ति पाता है और समझता है कि मैं इस महान भारत का वारिस हूँ; परंपरागत इस संप्रदाय की रक्ष करना मेरा कर्तव्य है। ऐसी भावना से वह अपने देश की सेवा के लिए तैयार रहता है।

वास्तव में इस देश में कई धर्मात्मा, वीरपुरुष, वीरनारियाँ पैदा हुईं उन्होंने संस्कृति की दृढ़ नींव डाली है। हमारा भाग्य यही है कि हमारी पैतृक-संपदा के रूप में उज्ज्वल इतिहास की परंपरा है। उनके आदर्शों के पालन करने से ही कोई विद्यावान-विज्ञानी बन सकता है। राष्ट्र के जीवन प्रवाह में वही विज्ञान अचल रहकर जीवन को सुशोभित करता रहता है। इसी सिलासले को आगे बढ़ाने के लिए महात्माओं के जीवनो को संक्षिप्त रूप में आपके सामने रखता हूँ।

हे भारत के भाग्यदाता बालक-आइए-स्फूर्ति पाइए

**एस.बी. रघुनाथाचार्य**

प्रधान संपादक





## सावित्री

भगवान कृष्ण ने कहा था - “जातस्य मरणं ध्रुवम्” जो जन्म लेता है उसे मरना ही होता है। पूरी उम्र बिताकर कोई मर जाता है तो बहुत ज्यादा दुखी होने की जरूरत नहीं है। क्योंकि यह संसार का नियम है। किन्तु बच्चों और युवा - वर्ग अगर असमय मृत्यु प्राप्त करते हैं तो हमें बहुत दुख होता है। किन्तु हम कुछ नहीं कर सकते हैं।

### अश्वपति की वेदना :

प्राचीन काल में अश्वपति नाम का राजा मद्र देश का शासन करता था। उसका राज्य धन सम्पत्ति से सम्पन्न था। उनकी पत्नी का नाम था - मालवी। राजा - रानी अपनी प्रजा को अपनी सन्तान की तरह देख-भाल करते थे। प्रजा भी राजा को अपने पिता समान मानती थी।

अश्वपति के जीवन में कोई अभाव नहीं था। सन्तान के नहीं होने के कारण उनका जीवन दुख से भर गया। वे चिन्ता करते थे - “मेरे बाद राज्य का शासन कौन संभालेगा। राजा नहीं है तो जनता सुरक्षित नहीं रहती। देश में दुष्ट बढ जायेंगे। उससे लोगों की मुसीबतें बढेगी। इन सब से बचने के लिए मुझे क्या करना चाहिए।” इस प्रकार चिन्ता करते - करते उन्होंने सन्तान पाने के उपाय खोजने लगे।

### तुम्हें बेटी ही होगी :

अश्वपति और पत्नी ने सन्तान पाने की इच्छा से सावित्री देवी की उपासना प्रारंभ की। अठारह साल निरन्तर उपासना करते रहे। अन्त में देवी ने दर्शन दिया और वर मांगने के लिए कहा। राजा ने देवी को प्रणाम

किया और कहा - देवी! पुत्र का वरदान दो। देवी ने कहा - “हे राजन्! तुम्हें पुत्री ही होगी।” राजा ने अपनी प्रार्थना दुहराई और कहा कि उसे पुत्र ही चाहिए।

तब देवी ने कहा - “हे राजन्! मुझे मालूम है कि तुम ने पुत्र की इच्छा से ही मेरी उपासना की थी। इस सन्दर्भ में मैं ने ब्रह्मा से चर्चा की। उस देव ने तुम्हें पुत्री का ही वरदान स्वीकार किया। तुम्हारी होनेवाली पुत्री का चरित्र बड़ा पावन होगा। वह सुशील होगी। उसके चरित्र के बल से तुम्हें बाद पुत्र भी प्राप्त होंगे”- और वह विलीन हो गयी।

### **सावित्री का जन्म :**

कुछ समय पश्चात् मालवी ने पुत्री को जन्म दिया। देवी सावित्री का वरदान होने के कारण उस बालिका का नाम “सावित्री” रखा गया। राजा - रानी ने बड़े लाड़ - प्यार से उसको पाल रहे थे। शुक्ल पक्ष के चाँद समान उसका रूप निखर रहा था। रूप और शील के साथ पढ़ने - लिखने में भी उसकी प्रतिभा अतुलनीय थी।

### **सत्यवान से प्यार :**

सावित्री के लिए अश्वपति ने योग्य वर को ढूँढना शुरू किया। उनको सावित्री के विवाह की चिन्ता होने लगी।

द्युमत्सेन साल्व देश का राजा था। सत्यवान उसका बेटा था। सौन्दर्य में वह कामदेव से भी सुन्दर था। गुणी और सुशील भी था। सावित्री ने उस राजकुमार के बारे में सुना था और उससे प्यार हो गया। मगर शर्म के कारण उसने किसी से कहा नहीं। इस प्रकार कुछ दिन बीत गये।

एक दिन तीनों लोकों में विचरण करनेवाले नारद ऋषि अश्वपति की सभा में आये। राजा ने मुनीन्द्र की पूजा की। इतने में सावित्री अपनी सखियों के साथ वहाँ आयी। उसने अपने पिता और मुनीन्द्र का चरण - स्पर्श किया।

नारद ने उसको देखा और राजा से कहा “तुमने अपनी बेटी का विवाह किसी योग्य वर के साथ अब तक क्यों नहीं किया।” राजा ने कहा - मुनीन्द्र! मैं उसी कोशिश में हूँ।” राजा ने अपनी बेटी से कहा - “बेटी! मैं कितना दूँड रहा हूँ। किन्तु तुम्हारे योग्य कोई लडका नहीं दिखायी दे रहा है इसलिए अगर तुम्हें कोई पसन्द है तो मैं खुशी से तुम्हारा विवाह उसी से करने के लिए तैयार हूँ।”

सावित्री ने शर्म से सिर झुका लिया। किन्तु धीरे से सत्यवान् से अपने प्यार की बात बतायी। उसने कहा - पिताजी! दैवयोग से द्युमत्सेन राजा ने आँखों की रोशनी खोयी, राज्य शत्रुओं के अधीन हो गया। इसलिए वे अब परिवार के साथ जंगलों में निवास कर रहे हैं। फिर भी मैं उन्हीं के पुत्र सत्यवान से प्रेम कर रही हूँ।”

अश्वपति ने नारद से पूछा - “हे मुनीन्द्र! तीनों लोकों की बातें आपको मालूम रहती हैं। सत्यवान के रूप, गुण, शील आदि के बारे में विस्तार से बताइए।”

नारद ने सत्यवान के बारे में कहा - हे राजन्! तुम्हारी बेटी ने जिस राजकुमार को पसंद किया वह सदा सत्य ही बोलता है। इसलिए उसका नाम ‘सत्यवान’ हो गया। उसका दूसरा नाम ‘चित्राश्व’ भी है। वह बड़ा

तेजस्वी, बुद्धिमान और महान वीर है। रूप और शील में उसकी कोई तुलना नहीं है।

### एक साल से ज्यादा जीवित नहीं रहेगा :

नारद ने कहा कि एक महत्वपूर्ण कमी के बारे में भी बताऊँगा। “इस दिन से प्रारंभ होकर एक साल तक ही जीवित रहेगा। उसके बाद उसकी मृत्यु होगी। यह बात भी तुमको बता देना मैं उचित समझता हूँ।” तब राजा ने अपनी बेटी से कहा - “बेटी! मुनीन्द्र की बात तुम ने सुनी। ये महान ऋषि हैं, इनको सभी रहस्य मालूम है। इनकी बात अटल है। एक साल के बाद जिसकी मृत्यु निश्चित है, ऐसा पति तुम्हें क्यों चाहिए मेरी बात सुनो, किसी और राजकुमार का वरण करो।”

सावित्री ने कहा - पिताजी! मैं ने सत्यवान् से मन से प्रेम किया। एक के ऊपर जो प्रेम है उसको दूसरों पर व्यक्त करना कुलीन कन्याओं को शोभा नहीं देती। मेरा दृढ़ निश्चय है। मैं ने तन-मन-वचन से सत्यवान का ही वरण किया। ऐसे में मैं किसी और को वर के रूप में नहीं सोच सकती।” बेटी के दृढ़ वचनों को सुनकर राजा आश्चर्यचकित रह गये।

सावित्री का दृढ़ संकल्प जान कर नारद भी चकित हो गये। उसके व्यक्तित्व की प्रशंसा की। राजा किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये। मौन बैठे राजा को देखकर नारद ने कहा - हे नरेन्द्र! तुम्हारी बेटी गुणवती है। उसके अटल निश्चय को बदलना हमारे बस की बात नहीं है। इसकी इच्छा के अनुसार सत्यवान से उसका विवाह कर दो। इसके पुण्य के कारण अन्त में सब अच्छा ही होगा।

राजा ने मुनीन्द्र की बात को मान लिया। नारद ने राजा और उसकी बेटी को आशीर्वाद दिया और देव-लोक चले गये।

### **आश्रम को जाना :**

अश्वपति अपनी बेटी सावित्री को साथ लेकर द्युमत्सेन महाराजा से मिलने गये। मंत्री, पुरोहित और बन्धु बान्धवों को भी अपने साथ ले गये। शादी के लिए आवश्यक सामग्री साथ लेकर जंगल के रास्ते से वे सभी द्युमत्सेन के आश्रम - निवास पर पहुँचे।

द्युमत्सेन को आश्चर्य हुआ कि राज्यच्युत और अन्धे उससे मद्र देश का राजा क्यों मिलने के लिए पहुँचा। अश्वपति के आगमन से खुश होकर आदर सत्कार करने के बाद बड़े प्रेम से पूछा कि उनके आगमन का कारण क्या है?

अश्वपति ने सावित्री से द्युमत्सेन को प्रणाम करने को कहा और आने का कारण बताया “नरेन्द्र! यह कन्या मेरी इकलौती बेटी है। देवी माँ की कृपा से हमने इसे सन्तान के रूप में पाया है। गुणवती मेरी इस लाडली बेटी को तुम्हारे पुत्र सत्यवान से विवाह करवाना चाहता हूँ। इसे तुम्हारी पुत्र वधू के रूप में स्वीकार कर मुझे अनुग्रहीत करो।

द्युमत्सेन ने कहा - “महोदय! आपका संकल्प अच्छा है। आपके समधी बनने से बड़ी खुशी और क्या हो सकती है? फिर भी अब हम राज्यहीन होकर जंगलों में निवास कर रहे हैं। आपकी लाडली बेटी इस जंगल में कैसे रहेगी? यहाँ की मुसीबतों को कैसे झेल सकेगी?”

अश्वपति ने इस प्रकार उत्तर दिया - हे राजन्! अमीरी - गरीबी अनित्य है। सम्पत्ति के साथ गर्व करना विपत्ति में धीरज खो बैठना उचित

नहीं है। मेरी बेटी में सुख दुख सहन करने की शक्ति और साहस है। हम ने बड़ी उम्मीद के साथ आपसे रिश्ता जोड़ने यहाँ तक की यात्रा की। हमारी इच्छा का तिरस्कार मत करो।

### **विवाह :**

राजा द्युमत्सेन ने खुशी से इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। पड़ोसी आश्रमवासी सब शादी में आये। सावित्री और सत्यवान का शुभ विवाह सम्पन्न हुआ। सभी ने हृदय से आशीर्वाद दिया। अश्वपति ने बेटी और दामाद को वस्त्र, आभूषण दिया और सपरिवार अपने राज्य लौट गया।

मन चाहा वर मिलने के कारण सावित्री बहुत खुश थी। सत्यवान भी सावित्री को पाकर आनन्दित था। दोनों का दाम्पत्य - जीवन सुखमय व्यतीत हो रहा था। नव दम्पति को देखकर आश्रमवासी भी उनके परस्पर प्रेम की प्रशंसा कर रहे थे।

सावित्री ने बहु मूल्य वस्त्र और आभूषण छोड़ दिया और अरण्यवास के अनुरूप वस्त्र पहनने लगी। उसके सहज सौन्दर्य में वृद्धि ही हुई। सास - ससुर की सेवा में सावित्री ने अपने मृदु स्वभाव का परिचय दिया। पति की सेवा में वह प्राचीन पतिव्रता स्त्रियों से आगे थी। मुनि पत्नियाँ सावित्री के गुणों से प्रभावित थी।

### **जीवन - अवधि :**

दिन सुख से बीत रहे थे। किन्तु नारद मुनि का कथन सावित्री के मन में वेदना भर रहा था। हृदय में वेदना भर कर भी वह बाहर खुशी

का इजहार कर रही थी। सावित्री अपने पति की आयु की सीमा का हिसाब कर रही थी। अवधि समीप होते - होते मन में चिन्ता बढ़ने लगी। किन्तु उसके चेहरे से धैर्य ही प्रकट होता था।

### **तीन - दिन का उपवास :**

आखिर वे दिन आ ही गये। सत्यवान की मृत्यु के लिए चार दिन ही बाकी रह गये। सावित्री भक्ति भावना से भगवान का ध्यान किया। बड़ी निष्ठा से तीन दिन का उपवास रखा। यह जानकर सास - ससुर ने उससे प्रश्न किया - “बेटी! इतना कठोर व्रत क्यों कर रही हो?

उसने विनय भाव से कहा - “आप मेरे व्रत की चिन्ता न करें। एक उद्देश्य के साथ मैं यह व्रत कर रही हूँ! क्यों कर रही हूँ, बाद में आपको पता चलेगा। यह सुनकर सास - ससुर शान्त हो गये।

तीन दिन बीत गये। भयंकर वह दिन आ ही गया। उस दिन सावित्री बड़े सबेरे ही उठ गयी। आने वाली विपदा उसके आँखों में समा गयी। दुख की बाँध टूटने लगी। फिर भी वह शान्त रही। सास - ससुर और पति की सेवा - टहल की। बड़ों का आशीर्वाद लिया।

सावित्री से द्युमत्सेन ने कहा - “तीन दिन हो गये। अब व्रत उद्यापन करो।” सावित्री ने अपना यह निश्चय बताया कि सूर्यास्त तक वह भोजन नहीं करेगी।

इतने में सत्यवान समिधा फल और फूल लाने जंगल जाने तैयार होने लगा। सावित्री ने अनुनय से कहा - “मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी।”

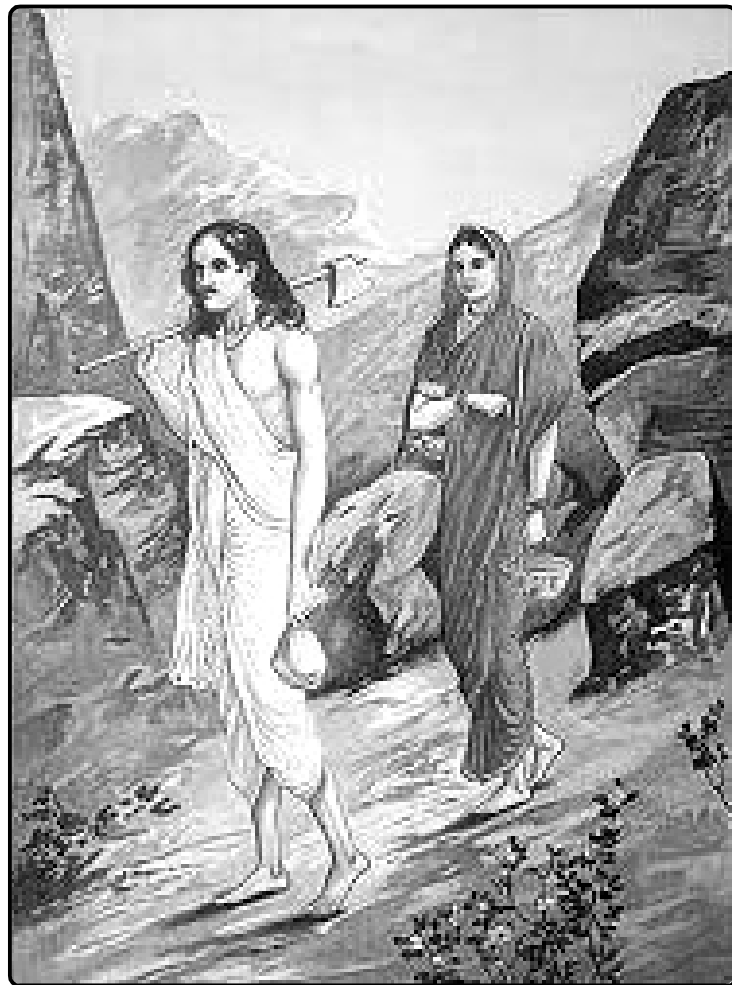
“सत्यवान ने कहा - “तीन दिन के उपवास के कारण तुम कमजोर हो। जंगल में चलना मुश्किल होगा।” सावित्री ने उत्तर दिया - “हे नाथ! उपवास से मुझे कोई कष्ट नहीं। जंगल में तरह - तरह के फूल, फल, लताएँ, वृक्ष, जानवर, पक्षी आदि होंगे। उन अद्भुत दृश्यों को मैं देखना चाहती हूँ। आज मैं ने आपके साथ चलने का निश्चय किया। आप मेरी इच्छा पूरी करो।”

सत्यवान ने स्वीकृति दी। सावित्री ने सास - ससुर को नमस्कार किया और पति के साथ जंगल जाने की अनुमति की प्रार्थना की। सास - ससुर सावित्री की इच्छा के अनुरूप उसको जंगल जाने की अनुमति दे दी।

### **जंगल की यात्रा :**

सावित्री और सत्यवान जंगल के लिए रवाना हुए। मन की व्यथा को दबाकर सावित्री मुस्कराहट के साथ पति का अनुगमन कर रही थी। धीरे - धीरे चलते हुए वे नजदीक के जंगल में पहुँच गये। वहाँ के सुन्दर दृश्यों को दिखाते हुए सत्यवान ने कहा - सावित्री इधर देखो! उस तालाब में तरंगों पर जो राजहंस विहार कर रहे हैं, वे कितने सुन्दर हैं! फूलों से लदी वृक्ष की शाखाएँ लता - गुल्म कितने सुन्दर हैं! हम जिन पौधों को पानी देकर बड़ा करते हैं वे पेड़ - पौधे और लताएँ क्या इतने सुन्दर होते हैं? देखो! लताएँ किस प्रकार पेड़ों से लिपट गयीं! भौरे फूलों की मधु का आस्वादन करते हुए - - रहे हैं, फलों को चखते हुए तोते किस प्रकार शोर मचा रहे हैं! यह सब कितना श्रुति - मधुर है।” सावित्री उसकी बातों पर उचित उत्तर देते हुए उसको ध्यान से देखते हुए आगे बढ़ रही थी।





एक जगह सत्यवान तरह - तरह फलों को तोड़कर टोकरी भर दिया। उसके बाद कुलहाड़ी से लकड़ी चीरते हुए थका - थका - सा लग रहा था। और कुलहाड़ी उसके हाथ से छूट गयी और जमीन पर गिर गयी। मुख विवर्ण हो गया और साँस फूल रही थी। उदास होकर पत्नी से कहा - " सावित्री! मेरी तबीयत खराब हो रही थी। सर चकरा रहा है। मन विकल हो रहा है। बहुत दर्द हो रहा है। अब मैं खड़ा नहीं रह सकता हूँ। कुछ देर मैं यही लेट जाऊँगा।"

सावित्री ने अपने पति के सिर को अपनी गोद में रख लिया। राजकुमार का सिर झुक गया और लेट गया। क्षण में उसके शरीर से चेतना जा रही थी।

### **यम का दर्शन :**

दूसरे क्षण में सावित्री ने अपने सामने एक दिव्य पुरुष का दर्शन किया। उसका शरीर काजल के समान काला था। लाल आखें, बड़े-बड़े दान्तों से भयंकर लग रहा था। उसकी तरफ देखने को ही डर लग रहा था। उसके हाथ में एक रस्सी भी था। वह पुरुष जल्दी - जल्दी सत्यवान के समीप पहुँच गया। सावित्री ने पति का सिर जमीन पर रखा और खड़ी हो गयी और विनय के साथ पूछा - "महाशय! आप कौन हैं? किस काम से आप यहाँ आये हैं?"

उस पुरुष को आश्चर्य हुआ कि सावित्री उसे कैसे देख सकी। उसने कहा - राजकुमारी! मैं यमराज हूँ। जीव कर्म के अनुसार उनके प्राणों को लेने वाला मैं ही हूँ। उनको मैं अपने लोक में ले जाकर उनके अपने पाप



- कर्मों के अनुसार सजा देता हूँ। साधारणतः मैं किसी को दिखायी नहीं देता हूँ। पातिव्रत्य की महिमा के कारण तुम मुझे देख सकी। तुम्हारे पति का अन्त समय समीप आ गया। यह पुण्यात्मा है और धर्मात्मा है। इसलिए उसके प्राण लेने मैं स्वयं आ गया हूँ।”

इस प्रकार कह कर यमराज ने सत्यवान के देह से प्राण लेकर उसके जीव को लेकर दक्षिण दिशा की ओर चला गया।

सावित्री का शोक बढ गया। फिर भी ऐसे समय दुःख में बैठ गये तो कोई प्रयोजन नहीं है। तुरन्त मन को धीरज बँधाया और कर्तव्य का निर्णय किया। पति के शरीर को एक सुरक्षित जगह रखा। काँपते पैरों का ध्यान छोड कर यमराज का अनुसरण करते चलने लगी।

सावित्री को पीछे आते देखकर यमराज ने अनुनय के स्वर में कहा “- बेटे! इस तरह मेरे पीछे क्यों आ रही हो। इस रास्ता पर चलना मुश्किल है। पीछे लौट जाओ।”

तब सावित्री ने इस प्रकार कहा - “हे यमराज! सती का धर्म है कि पति जहाँ जाये वह भी वही जाये। मैं अपने पति को छोड कर कैसे रह सकूँगी। आपकी कृपा है मैं कितना भी दूर हो, आ सकती हूँ।

संसार में धर्म सब से महत्वपूर्ण है। आप जैसे सज्जन ही उस धर्म की रक्षा करेंगे। आप जैसे महानुभावों का दर्शन व्यर्थ नहीं होगा। आपका दर्शन कर आपकी कृपा पाये बिना मैं क्या यूँ ही लौट जाऊँगी!”

उन बातों से यमराज खुश हुआ और कहा पहला वर - ससुर को दृष्टि का दान।

“बेटी! तुम बहुत होशियार हो। तुम्हारी बातें मुझे बहुत अच्छी लग रही हैं। तुम्हारे पति के प्राणों को छोड़ कर कोई और वर माँगो। मैं दूँगा।

सावित्री ने उनको नमस्कार किया और अनुरोध किया - हे देव! आप दया का साकार रूप हो! आपकी किस प्रकार स्तवन करूँ, मुझे समझ में नहीं आ रहा है। अन्धे होकर, राज्य खोकर जंगलो में भटक रहे मेरे ससुर द्युमत्सेन महाराजा को आँखों की दृष्टि प्रदान कीजिए।”

यमराज ने उसकी कामना को पूरा कर कहा - “अब फिर तुम मेरे साथ नहीं आना। तुम लौट जाओ।” वह जल्दी - जल्दी चला जाने लगा। सावित्री फिर उनके साथ चलने लगी।

### **दूसरा वर - ससुर के राज्य की पुनः प्राप्ति :**

यमराज के पीछे - पीछे जाते हुए उनसे प्रार्थना करने लगी - हे महानुभाव! आर्य लोग किसी का अपकार नहीं करते हैं। दीन पर दया



करते हैं। कोई कुछ मांगता है तो तुरन्त देने के लिए तत्पर रहते हैं। आश्रितों को किसी भी परिस्थिति में नहीं छोड़ते आप जैसे महान लोग इन धर्मों का पालन करते हैं। आप नहीं जानते ऐसा कौन सा धर्म है? सब के प्रति आपका समभाव रहता है। इसीलिए सारा संसार आपकी पूजा करता है। जीवों का पाप भी आप दूर करते हैं आपकी दया अगर नहीं है तो हमारी रक्षा कौन करेंगे।”

तब यमराज ने कहा - सावित्री धूप में प्यासा आदमी को ठण्डा पानी मिलने के समान तुम्हारी बातें मुझे आनन्द दे रही है। मैं चाहता हूँ कि तुम्हें दूसरा वर दूँ। सत्यवान के प्राणों को छोड़कर कोई दूसरा वर माँगो।”

उसने प्रार्थना की - “हे देव! धुमत्सेन महाराजा का राज्य जो शत्रुओं के अधीन है उसे उन्हें वापस मिलें, ऐसा वर दो।” धर्म देवता ने उसके दूसरे वर को पूरा किया।

बाद में यमराज ने कहा - सावित्री अब तुम रुक जाओ। यह रास्ता बहुत कठिन है। तुम्हारे पुण्य - फल से सास - ससुर और पति के प्रति तुम्हारी भक्ति सार्थक हुई। अब तुम्हें मेरे पीछे बिल्कुल नहीं आने दूँगा। आगे मानवों का रास्ता नहीं है। यहीं से लौट जाओ।

### **तीसरा वर - पिता के लिए पुत्र - सन्तान :**

सावित्री फिर यमराज के पीछे चलने लगी। धीर कार्य - सिद्धि का मार्ग नहीं छोड़ते! यमराज के पीछे चलते हुए सावित्री ने उनसे अनुनय



के साथ कहा - “धर्मात्मा! आप जैसे लोग कभी धर्म कार्यों को नहीं छोड़ते। उनके हृदय में मोह जैसे दुर्गुणों के लिए स्थान नहीं रहता। “धर्मो रक्षति रक्षितः।” धर्म के मार्ग से हटनेवालों को आपदा अवश्यम्भावी है। पति का अनुसरण करना सती का धर्म है। उस धर्म को मैं कैसे छोड़ सकती हूँ। आप भी जानते हैं कि कष्टों से डर कर धर्म का मार्ग छोड़ना उचित नहीं है।”

इस बात पर यमराज ने प्रसन्न होकर बोला - बेटी! तुम धर्म का पालन कर रही हो। इस लिए तुम पर मुझे स्नेह है। तुम्हें और एक वर देना चाहता हूँ। पति के प्राण छोड़ कर तुम कुछ भी माँगो।”

सावित्री ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की - हे देव! आपकी कृपा की कोई सीमा नहीं है। आपकी कृपापात्र होकर मेरा जीवन धन्य हो गया। मेरे पिता अश्वपति को पुत्र - सन्तान नहीं है। उनको पुत्र सन्तान का वर दीजिए।”

यमराज ने उसे तीसरा वर भी दिया और कहा - “सावित्री! तुम बहुत दूर आ गयी हो। तुम थक गयी हो। आगे का रास्ता तुम्हारे चलने योग्य नहीं है। रास्ता काँटे और कंकड़ों से भरा हुआ है। साँप - बिछू और क्रूर जंगली जानवरों के विचरण का प्रदेश है। मैं ने तुम्हारी सभी इच्छाओं को पूरा किया। फिर भी तुम मेरे पीछे क्यों आ रही है। लौट जाओ।”

तब उस पतिव्रता ने इस प्रकार बिनती की - “हे देव! मेरे पति के अलावा मेरे मन में किसी का ध्यान नहीं है। मैं सदा मेरे पति का ही स्मरण कर रही हूँ। सतियों के लिए पति के समान कोई देवता नहीं है।



उस पति के अनुसरण के अलावा मेरे लिए और कोई रास्ता नहीं है। तब मुझे थकान कैसी?”

इतना ही नहीं, आप जैसे पुण्यात्मा और धर्मात्मा का दर्शन मिलना दुर्लभ है। महान लोगों के दर्शन से पाप नष्ट होते हैं। इस धरती को पवित्रता मिलती है। आप जैसे महानुभावों के प्रभाव से ही सूर्य - चन्द्र निरन्तर प्रकाश के साथ आकाश में संचार कर रहे हैं। सागर अपनी सीमाओं में प्रवाहित हो रहे हैं। कुल के पर्वत स्थिर हैं। आप जैसे लोगों की कृपा के बिना संसार में शान्ति और सुख नहीं मिलते हैं।

मेरे पूर्व जन्म के पुण्य फल से आपके साथ परिचय हुआ। कहा जाता है कि सात संवादों से बड़ों से मित्रता होती है। मैं ने आपसे बहुत बातें की। इसलिए हम दोनों के बीच मित्रता कायम हो गयी। सज्जन मित्रों की इच्छा को कभी अस्वीकार नहीं करते। हे महात्मा! मेरी इच्छा पूरी कर मुझ पर कृपा कीजिए।”

### **चौथा वर - पति को जीवन-दान :**

इन बातों को सुनकर यमराज के हृदय में दया का सागर उमड़ पड़ा। तुरन्त उसने कहा - सावित्री! तुम्हारी प्रार्थना से मैं प्रसन्न हुआ। तुम्हारी इच्छा के अनुसार मैं और एक वर दूँगा। माँगो!”

आनन्द से सावित्री की आँखें खिल गयी। वह यमराज के पैरों पर गिर पड़ी। उसने प्रार्थना की -

हे देव! इससे पहले वर देते समय आपने कहा कि मैं अपने पति के प्राणों के अलावा कुछ माँगूँ। परन्तु अब आपने ऐसा नहीं कहा। आपकी दया के लिए मैं क्या कहूँ मेरा पुण्य - फल है।

पति की मृत्यु के बाद स्त्री का जीवन दरअसल जीवन ही नहीं है। उसका कोई आदर नहीं करते। शुभकार्य में उसको प्रवेश नहीं है। मेरे पति महान है, यशस्वी है। गुणी मेरे पति के बिना मैं जीवित नहीं रह सकती। धर्मात्मा! मेरे पति को जीवन - दान दे दो। उससे बढ कर मुझे और कुछ नहीं चाहिए।”

### **सत्यवान पुनः जीवित हुआ :**

यमराज ने उसकी प्रार्थना सुनी। सत्यवान को प्राण - दान दिया और कहा - “तुम्हारी इच्छानुसार तुम्हारे पति को छोड रहा हूँ। इस संसार में यह अनेक वर्ष जिएगा। आप लोगों को सौ पुत्र होंगे। उसका यश चारों तरफ व्याप्त होगा। वह यज्ञों के द्वारा देवता - गण को तृप्त करेगा। उसका वंश शाश्वत होगा।” यमराज अदृश्य हो गया।

सावित्री आनन्द के साथ पति के शरीर के पास गयी। उसने सत्यवान के सिर को अपनी गोद में लिया। कुछ ही देर में सत्यवान के शरीर में चेतना लौटी।

उसने सावित्री को देखा और कहा - “सावित्री! मैं बहुत देर तक सो गया। तुम ने मुझे क्यों नहीं जगाया। मुझे लगा - किसी व्यक्ति ने मुझे खींचा। क्या तुम्हें पता है, वह कौन है? वह सपना तो नहीं था। सत्य ही लगा। मुझे बहुत डर लगा। मुझे बता-- कि आखिर क्या हुआ?”

तब सावित्री ने बताया - “सारी बातें मैं कल बताऊँगी। अब अन्धेरा हो गया। अब हमारा यहाँ रहना ठीक नहीं है। देखो! राक्षस इधर - उधर विचरण कर रहे हैं। सभी जानवर अपनी - अपनी जगह वापस लौट रहे

हैं। जल्दी हम आश्रम जायेंगे। अभी तो बहुत देर हो गयी। आपके माता - पिता हमारे लिए बेचैनी से इन्तजार कर रहे होंगे। तुरन्त जाकर उनकी चिन्ता दूर करेंगे। नहीं तो वे व्याकुल होंगे।”

सावित्री के बहुत कहने पर भी सत्यवान उठ नहीं सका। वह अभी अपने शोक से उभर नहीं सका, जानकर सावित्री ने फिर से कहना शुरू किया -

“अन्धेरा क्षण - क्षण बढ़ रहा है। यहाँ से आश्रम बहुत दूर है। आपकी थकान अभी दूर नहीं हुई। अब अगर हम नहीं जा सकते तो यहीं - रह जायेंगे। सबेरा होते ही चले जायेंगे। आप ही बताइए कि हम क्या करेंगे?” सत्यवान ने कहा - “सावित्री! मेरे सिर का दर्द कम हो गया। अभी मैं ठीक हूँ, धीरे - धीरे चलूँगा। माता - पिता को वहाँ छोड़कर हम इस जंगल में नहीं रह सकते। मैं ने इस तरह उनको कभी नहीं छोड़ा। हमारे अब तक वहाँ नहीं पहुँचने से वे लोग क्या सोच रहे होंगे?” शाम के समय हमारी माँ हमें घर छोड़ने नहीं देती थी। कितनी व्याकुल हुई होगी। वे बूढ़े ही नहीं दृष्टिहीन भी हैं। उनकी पूरी आशाएँ हमारे ऊपर हैं। अगर हम घर नहीं पहुँचेंगे तो वे कितना विलाप करेंगे। जंगल में आकर फल तोड़ते ही हमें वापस चले जाना चाहिए था। हम ने यूँ ही देर कर दी। दैव ने हमारी परीक्षा ली। आश्रमवासियों से मेरे पिताजी पूछताछ कर रहे होंगे। सावित्री! उनको अगर कुछ हो गया तो इतनी देर से जाकर हम क्या करेंगे?” सत्यवान की आँखों से आँसू आ रहे थे। सावित्री भी दुखी हो गयी। फिर भी उसने पति को दिलासा दिया। धीरे से उनके हाथ पकड़ कर उठाने लगी।

### आश्रम पहुँचना :

सत्यवान धूल झटक कर जाने के लिए तैयार हो गया। फलों की टोकरी को वहीं छोड़कर पति की बाँह पकड़ कर आश्रम की ओर चलने लगी।

इतने में धर्म देवता के वरदान के कारण द्युमत्सेन की आँखों की दृष्टि वापस आ गयी। उन्होंने - आश्रम के चारों तरफ देखा। उनका प्रिय पुत्र नहीं दिखायी दिया तो उनको सूना - सूना लगा। पति - पत्नी दुखी होने लगे। पुत्र के गुणों को स्मरण कर विलाप करने लगे।

उनका विलाप सुन कर आश्रमवासी सब इकट्ठा हो गये। द्युमत्सेन को अचानक दृष्टि मिल जाने से आश्चर्यचकित हो गये। वृद्ध दम्पती को ढाढस बँधाने लगे।

कुछ देर बाद सावित्री और सत्यवान वहाँ पहुँच गये। उनको देख कर वृद्ध - दम्पति की आँखों से आँसू आ गये। उन्होंने पुत्र को गले लगाया। उनको देखकर आश्रमवासी आनन्दित हो गये।

द्युमत्सेन ने पुत्र से पूछा कि इतनी देर वे जंगल में क्यों रह गये।

तब सत्यवान ने पिता से इस प्रकार कहा - “पिताजी! यहाँ से हम दूसरे जंगल चले गये। वहाँ से आवश्यक फल तोड़ लिये। उसके बाद लकड़ियाँ चीरते हुए मुझे बहुत ज्यादा सिर दर्द हो गया। सारे शरीर में शूल चुभ रहे थे। उस दर्द को बर्दाश्त नहीं कर सका, वहीं लेट गया। इतने में लगा कि सपने में कोई पुरुष पकड़ कर ले जा रहा था।”

### यमराज की कृपा :

उसके बाद सावित्री ने अपने ससुर को सारी बात समझाया -” मैं ने सुना नारद मुनीन्द्र ने जब आपसे कहा कि आज के दिन आपके पुत्र की मृत्यु होगी। मुनीन्द्र की बात को अटल जानकर मैं उनके साथ जंगल गयी। वहाँ थकान से जब ये सो गये तो यमराज वहाँ आये। उन्होंने इनके शरीर से जीव को अलग कर अपने यमपाश में बाँध कर यमलोक ले जाने लगे।

मैं उनके पीछे - पीछे चलती हुई उनसे प्रार्थना कर मन को जीत सकी। उस देव ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर उन्होंने मुझे चार वर दिये। उनमें से एक वर के फलस्वरूप आप का पुत्र जीवित हो सका।

बाकी तीन वरों - एक वर आपको दृष्टि - दान, दूसरा वर आपके लिए राज्य पुनः प्राप्ति, तीसरा वर मेरे पिता के लिए पुत्र सन्तान था। यमराज ने ये सभी वर मेरी प्रार्थना से प्रसन्न होकर दिये।”

बहू की बातों को सुनकर वृद्ध दम्पती आनन्द के सागर में तैरने लगे। उसका अभिनन्दन करते हुए कहा - बेटी! तुमने मुसीबतों के सागर में डूबे हमारे वंश को उबार लिया। संसार में तुम्हारा चरित्र पूजनीय होगा!

आश्रमवासी सभी ने सावित्री की महानता जानकर उसकी प्रशंसा की और आशीर्वाद दिया।

### द्युमत्सेन को राज्य की प्राप्ति :

कुछ दिनों के बाद द्युमत्सेन के मंत्री सेवक और उनके राज्य के नागरिक आश्रम को आया - “हे राजा! आपके शत्रु आपसी कलह के

कारण परिवार और मित्रों के साथ समाप्त हो गये। सारी जनता आपको वापस उस राज सिंहासन पर देखना चाहती है। सारे राज्य में आपके जय जयकार ही हो रहे थे। आपकी तपस्या से आपकी आँखों की दृष्टि वापस आ गयी। हमारी प्रार्थना स्वीकार कर तुरन्त अपने राज्य वापस आ जाइए।”

द्युमत्सेन को उनकी बातों से बड़ी खुशी हुई। आश्रमवासियों से बिदाई लेकर पुत्र के साथ, सपरिवार अपने राज्य जाकर द्युमत्सेन ने राज्य की प्रजा की अनुमति से सत्यवान् को युवराज बनाया। राज्य का, धर्म बद्ध शासन करने लगा।

इस प्रकार सावित्री ने अपने पतिव्रता धर्म के प्रभाव से अपने आपको, पति को, सास - ससुर एवं माता - पिता का उद्धार कर संसार में पूजनीय होकर प्रसिद्ध हुई।

\* \* \*

